

पञ्चमः पाठः - सुभाषितानि (पद्य)

1. पाठ परिचय

इस पाठ में संस्कृत साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों (जैसे भर्तृहरि नीतिशतक, पञ्चतन्त्र आदि) से 10 महत्वपूर्ण 'सुभाषित' (अच्छे वचन) संकलित किए गए हैं। ये श्लोक जीवन जीने की सही कला, परिश्रम का महत्व और अच्छे आचरण की शिक्षा देते हैं।

2. मुख्य श्लोक एवं उनके अर्थ

श्लोक 1 (आलस्य और परिश्रम): आलस्य ही मनुष्य के शरीर में स्थित उसका सबसे बड़ा शत्रु है। परिश्रम (उद्यम) के समान कोई मित्र नहीं है; जिसे करके मनुष्य कभी दुखी नहीं होता।

श्लोक 2 (गुणों की पहचान): गुणी व्यक्ति ही गुण को जानता है, निर्गुण नहीं। जैसे शेर के बल को हाथी जानता है, चूहा नहीं। कोयल ही वसंत ऋतु का गुण जानती है, कौआ नहीं।

श्लोक 4 (क्रोध का परिणाम): जो क्रोध अकारण (बिना बात के) होता है, वह मनुष्य के शरीर को वैसे ही जला देता है जैसे लकड़ी के अंदर स्थित आग लकड़ी को ही जला देती है। क्रोध मनुष्य का प्रथम शत्रु है।

श्लोक 6 (समानता में मित्रता): हिरण हिरणों के साथ, गाएँ गायों के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ और विद्वान विद्वानों के साथ चलते हैं। समान स्वभाव और आदतों वालों में ही मित्रता होती है (समानशीलव्यसनेषु सख्यम्)।

श्लोक 10 (दूसरों का अहित): जो व्यक्ति अपना भला चाहता है, उसे कभी भी दूसरों के लिए बुरा कर्म नहीं करना चाहिए।